

खान – भंडार । आवे – आता है । सन्तोष धन – सन्तोष रूपक धन । धूरि – धूल, रेत । समान – बराबर । रोष – गुस्सा, क्रोध, रुखाई । रसना – जीभ, जिह्वा, जबान, रसना, खोलना – बोलना । बरु – बल्कि, वरन् । तरवारि – तलवार, खड्ग, कृपाण । परिनाम – परिणाम, नतीजा । हित – मंगल, भलाई । विचारि – विचार करके, सोच समझकर ।

दोहों को समझें :

- मीठे वचन सबको प्रिय होते हैं । मीठी वाणी से हम सबको अपने वश में कर सकते हैं । मीठी वाणी से सब ओर शान्ति बनी रहती है । सबको सुख मिलता है । ठीक इसके विपरीत कड़ुए वचन सबको दुःख पहुँचाते हैं । मीठे वचन तो वशीकरण मंत्र (सबको वश में करनेवाले) के समान है । इसलिए हमें कड़ुए वचन न बोलकर मीठी वाणी ही बोलनी चाहिए ।
- आम तौर पर हमारी धारणा है कि जिसके पास पर्याप्त गाय-भैंस, हाथी या घोड़े हैं या धनरत्न, हीरा, मोती आदि हैं, वह सबसे बड़ा धनी है । लेकिन तुलसी दास के अनुसार ये सारे धन होते हुए भी अगर मन में सन्तोष नहीं है तो ये सब मूल्य हीन हैं । सन्तोष रूपी धन के सामने ये सब धूलि के बराबर तुच्छ हैं । क्योंकि इस प्रकार के धनसे सुख, शान्ति नहीं मिलती । मन चिंतित रहता है ।
- जब क्रोध अधिक हो तो जीभ नहीं खोलनी चाहिए । क्रोध में मनुष्य कड़वी बातें बोल जाता है । अर्थात् किसी को कुछ नहीं कहना चाहिए । ये कड़वी बातें तलवार से भी अधिक घाव करती हैं । कड़वी बातों का प्रहार सीधे हृदय और मन पर होता है । तलवार शरीर पर घाव करती है, मगर कड़वी बातें दिल, मन को घायल करके अधिक कष्ट देती हैं ।

प्रश्न और अभ्यास

- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो - तीन वाक्यों में दीजिए :
 - कठोर वचन का क्यों परिहार करना चाहिए ?
 - मीठे वचन से क्या लाभ होता है ?
 - सन्तोष धन के सामने कौन-कौन से धन धूरि के बराबर माने जाते हैं ?
 - रोष या गुस्से के समय क्या नहीं खोलना चाहिए और क्यों ?
 - मीठे वचन की तुलना वशीकरण मन्त्र से क्यों की गई है ?
 - हमें सोच विचार कर क्यों बोलना चाहिए ?

2. निम्नलिखित अवतरणों का आशय दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

- (क) तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुँओर ।
- (ख) जब आवे सन्तोषधन, सबधन धूरि समान ।
- (ग) रोष न रसना खोलिए बरु खोलिओ तलवार ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

- (क) किससे चारों ओर सुख उपजता है ?
- (ख) वशीकरण का मंत्र क्या है ?
- (ग) हमें क्या परिहार करना या छोड़ना चाहिए ?
- (घ) कवि ने सन्तोष की तुलना किस से की है ?
- (ङ) कब रसना नहीं खोलनी चाहिए ?
- (च) किस धन के सामने सारे धन तुच्छ माने जाते हैं ?
- (छ) सन्तोष धन के सामने सब धन किसके समान होते हैं ?
- (ज) विचार करके वचन कहने से क्या होता है ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :

मीठा, सुख, कठोर, छोड़ना, समान, खोलना

2. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए :

वचन, सुख, कठोर, उपजना, गो, गज, बाजि

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से सार्थक वाक्य बनाइए :

वशीकरण, कठोर, गोधन, सन्तोष, तलवार

4. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :

चहुँओर, वशीकरण, धूरि, तरवारि, परिनाम

5. निम्नलिखित शब्दों के साथ करण कारक 'से' चिह्न का प्रयोग करके वाक्य बनाइए :

वचन, मंत्र, धन, तलवार



रहीम

कवि परिचय :

रहीम का पूरानाम अब्दुरहीम खानखाना है। उनका जन्म सन् 1556 में हुआ था। वे अकबर के अभिभावक बैरम खाँ के पुत्र थे। शाही महल में उनका बचपन बीता। बाद में उन्हें गुजरात की सूबेदारी मिली।

रहीम अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे जानकार थे। वे हिन्दू संस्कृति और भक्ति-भावना से प्रभावित थे। उन्होंने दरबार का शाही ठाट देखा। वे बड़े पद पर काम करते थे। लेकिन उनमें गर्व का नाम न था। आम जनता के जीवन को देखा था। रहीम एक सहृदय, स्वाभिमानी, वीर और दानी व्यक्ति थे। साधारण मानव के प्रति उनके मन में बड़ा प्रेम था। उनके दोहों में अनुभूति की गहराई मिलती है। भक्ति, नीति, वैराग्य, श्रृंगार जैसी बातें उनकी रचनाओं में पायी जाती हैं। रहीम - काव्य के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें रहीम रत्नावली, रहीम विलास प्रामाणिक हैं।

दोहे

तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पिय हिं न पान ।
कहि रहीम पर काज हित संपत्ति संचहि सुजान ॥
रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवै सुई कहा करै तलवारि ॥
रहिमन पर उपकार के करत न यारी बीच ।
मांस दिये शिवि भूप ने , दिन्हीं हाड़ दधीचि ॥

शब्दार्थ :

तरुवर - पेड़, वृक्ष, तरु । खात - खाता । सरवर - तालाब, पुष्करिणी । पियहिं - पीता है । पान - पानी, जल । पर - पराया । हित - मंगल । संचहि - एकत्र करना, संचय करना, संपत्ति धन, वित्त जमा करना । सुजान - उत्तम लोग । लघु - छोटा । डारि - डारना, फेंकना, डालना, सुई - सूजी, सुई, सूची । तलवारि - तलवार, कृपाण, खड्ग । यारी - दोस्ती । भूप - राजा, नरेश, नृपति, भूपति ।

दोहों को समझें :

1. पेड़ अपना फल नहीं खाता । तालाब अपना पानी नहीं पीता । ये दोनों क्रमशः दूसरों के लिए फल और पानी की बचत करते हैं । कारण फल खाने से दूसरों की भूख मिटती है । उसे आनन्द मिलता है । पानी पीने से प्यास मिटती है । सन्तोष होता है । ज्ञानी लोग सूझबूझवाले हैं । इसलिए वे दूसरों की भलाई के लिए संपत्ति का संचय करते हैं । इससे परोपकार होता है । कारण परोपकार एक महान कार्य है ।
2. कवि रहीम का कहना है कि अगर बड़े लोग आपके मित्र हैं, तो छोटे लोगों को छोड़ मत दीजिए । कारण समाज में दोनों का अलग-अलग महत्व होता है । इसलिए उन्होंने एक उदाहरण देकर कहा है कि जहाँ छोटी सुई की जरूरत होती है, वहाँ आपके पास तलवार है तो क्या उससे काम होगा ? नहीं । इसलिए दोनों का आदर करना चाहिए ।
3. कवि रहीम कहते हैं कि केवल जहाँ दोस्ती या मित्रता हो वहाँ उपकार नहीं किया जाता । परोपकार तो किसीके भी साथ किया जा सकता है । हम कहीं भी किसी भी स्थान पर आवश्यकता पड़ने पर दूसरे का उपकार कर सकते हैं । जैसे – शिवि राजाने अपना मांस अपरिचित बाज को दिया । दधीचि ऋषि ने देवताओं की मदद के लिए हड्डियाँ दे दीं, उससे बज्र बनाया गया । देवताओं का शत्रु वृत्रासुर मारा गया । उससे दधीचि को किसी लाभ की आशा नहीं थी, केवल परोपकार की भावना थी ।

शिवि :

पुराने जमाने में शिवि नामक एक राजा थे । वे बड़े परोपकारी थे । एकबार बाज पक्षी से डरकर एक कबूतर उनकी शरण में आई । राजा ने उसे शरण दे दी । उसको खाने वाला भूखा बाज उसके पीछे-पीछे आकर अपने आहार के लिए राजा से कबूतर माँगा । उसके बदले राजा शिवि ने उसे अच्छे खाद्य देने को कहा । पर बाज राजी नहीं हुआ । उसने राजा से कबूतर के बराबर मांस माँगा । अन्त में राजा ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपने शरीर से मांस काट कर भूखे बाज को दे दिया था । आखिरकार वे तराजू पर बैठ गए । अपना पूरा बलिदान कर दिया ।